व्यवसाय के सामाजिक दायित्व

जब व्यवसाय में नैतिकता की बात की जाती है तो एक सामान्य सोच यह देखने को मिलती है कि व्यवसाय में नैतिकता की बात करना बेनामी है. इस नजरिये के पीछे क्या कारण है कि व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य नैतिक मापदंडों की पालना नहीं होती है. कुछ का विश्वास है कि निगम के प्रबन्धक विशेष किस्म के दायित्व रखते हैं जो उस तरह के व्यवहार को वैध करते हैं जिसको अन्यथा स्वीकार नहीं किया जा सकता. इसी तरह का तर्क न्यायधीश के आपतिजनक व्यवहार को भी न्यायसंगत ठहराया जाता है इस दृष्टि से व्यापारिक व्यक्ति को प्राथमिक दायित्व उस निगम के *लाभ* को बढाना है जिसमें वे काम करते हैं.

 कोरपोरेट के विशेष दायित्व संबंधी संकल्पना ‘*स्वतंत्र बाजार’* आधारित अर्थतंत्र के विचार के प्रति प्रतिबद्धता है. इस विश्लेषण में, व्यापार निजी सम्पति है जिसका कार्य निवेशक केलिए लाभ को अर्जित करना है जिनका अंतिम सामूहिक प्रयास सामाजिक कल्याण में होता है. इस दृष्टिकोण का निहितार्थ इस धारणा में है कि समुदाय कल्याण व्यक्तियों के कल्याण के साथ तादात्म्य रखता है. पूंजीवादी तंत्र में प्रत्येक व्यक्ति सफल नहीं होता है और कुछ दूसरों से बहुत आगे निकल जाते हैं. किन्तु यह असमानता कोई समस्या नहीं है. आत्म-हित आधारित तंत्र में, व्यक्तियों का असमान पारश्रमिक उनका अर्थव्यवस्था में असमान योगदान का परिणाम है. इस दृष्टिकोण के अनुसार आर्थिक न्याय यह है कि जिसने जैसा योगदान दिया वैसा उसको पारश्रमिक मिला. इसके अतिरिक्त, उद्द्मियों द्वारा नवाचार के माध्यम से ओर अधिक उत्पादन करने का आत्म-हित से जो संपदा उत्पन्न होती है उसके लाभ में कुछ हदतक प्रत्येक व्यक्ति की साझेदारी रहती है.

 मिल्टन फ्रायडमन तर्क देते हैं कि व्यवसायिकों का दायित्व अपने नियोक्ता की इच्छाओं को पूरा करना है. नियम के अनुसार, नियोक्ता, का उद्देश्य लाभ को बढ़ाना है.फ्रायडमन, *स्वतंत्र बाजार* के मूल्य के  प्रबल समर्थक के रूप में इस बात पर जोर देते हैं कि निगम के कर्मचारी विशेष तरह का आर्थिक कार्य करने केलिए बंधे हुए हैं. इसलिए, प्रदुषण या भेदभाव को कम करने में मदद करने की उनकी कोई जबाबदेही नहीं है. उल्टा, प्रबंधकों के नैतिक निर्णय भी शेयरधारकों के हितों को सुरक्षित करते हुए ]उन्हें आगे बढ़ाने के प्राथमिक दायित्व है, से निर्देशित होने चाहिए. लेखक का जोर है कि व्यवसायिक कर्मचारी व्यवसायिक निर्णयों में सामाजिक दायित्व के निर्वहन के न तो विशेषज्ञ हैं और न ही अधिकृत हैं. व्यवसायिक गतिविधियों को संचालित करने में, केवल उत्पीड़न और जालसाजी से बचना चाहिए. इस दृष्टि से, सरकार को स्वतंत्र प्रतियोगिता को बनाये रखने और धोखेबाजी को रोक ने संबंधी नियम बनाने चाहिए.

बहुत से आलोचक इस विश्वास को चुनौती देते हैं कि व्यवसायी धोखे और उत्पीड़न से बचने के अलावा कोई सामाजिक दायित्व नहीं रखते हैं. पूंजीवादी तंत्र में वितरणात्मक न्याय के सिद्धांत संबंधी बुनियादी प्रश्न है.वितरणात्मक न्याय तभी संतोषजनक है जब प्रत्येक व्यक्ति वही प्राप्त करे जिसके लिए वह पात्र है. पूंजीवादी तंत्र में प्रत्येक वितरण प्रधानत: उसके अर्थव्यवस्था में योगदान पर निर्भर रहता है. यद्धपि, व्यक्तियों की बाह्य परिस्थितियां उनके योगदान को रोकती हैं. पूंजीवादी तंत्र में अवसरों की असमानता और काम के पारश्रमिक को लेकर कुछ आलोचक आर्थिक तंत्र में बुनियादी पुनर्संरचना की मांग करते हैं. समाजवादी वकालत करते हैं कि उत्पादन संसाधनों पर ‘*निजी* ‘ की जगह ‘*सामाजिक*’ नियन्त्रण हो. समाजवादी तंत्र *वितरण*  के सिद्धांत को *योगदान* की बजाए *आवश्यकता* पर आधारित होता है. समाजवाद के रक्षक वितरणात्मक न्याय के सिद्धांत में *आवश्यकता*  को सबसे प्राथमिक मानते हैं.कुछ दूसरी दृष्टि के आलोचक यद्धपि फ्रायडमन के निगमीय सामाजिक उतरदायित्व संबंधी संकीर्ण विचार को ख़ारिज करते हैं किन्तु उसमें कोई मौलिक बदलाव की मांग नहीं करते हैं. वे मानते हैं कि व्यवसायी सामाजिक संस्थाओं की तरह लाभ अर्जित करने के विशेष आर्थिक कार्य के साथ दूसरे कार्य भी सम्पन्न करते हैं. कुछ व्यवसायी इस बात से भयभीत हैं कि सामाजिक दायित्वों के बढ़ने के साथ-साथ नियम और नियंत्रण भी बढ़ जायेगा. दूसरे तर्क देते हैं कि यदि व्यवसायी सामाजिक दायित्वों केव निर्वहन केलिए कुछ पहलकदमियां लेता है तो सरकार के हस्तक्षेप से बचना चाहिए.व्यवसायी के सामाजिक दायित्वों को बढ़ाने के पक्षकार एक समस्या का सामना करते हैं जिसकी जड़ें बड़े निगमों की प्रकृति में है. निगम व्यक्ति नहीं है, यह व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो सामूहिक रूप से निर्णय लेते हैं और नीतियों को बनाते हैं. कुछ सिद्धांतकार दावा करते हैं कि केवल व्यक्ति ही नैतिक दायित्वों को पूरा करने में सक्षम हैं. इस प्रकार, वे कहते हैं कि निगमों को नैतिक वाहक और एक नैतिक नियम रखनेवाले व्यक्ति के रूप में समझना अनुचित होगा.

 फ्रायडमन स्वतंत्र बाजार तंत्र के अदृश्य हाथों में नैतिक दायित्व को चिन्हित करते हैं. कुछ लोग व्यवसायिक नैतिकता केलिए सरकार की भूमिका को बढ़ाने के पक्ष में हैं. और कुछ विश्वास करते हैं कि नैतिक व्यवहार की जिम्मेदारी निगमों के प्रबंधकों को देनी चाहिए.